रात्रि क्लास 28/10/68 :– मूल बात है कि बाप की याद में बैठो। और स्वर्ग की बादशाही की खुशी में बैठे हो। गायन भी है अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। गोप–गोपियाँ न सतयुग में न कलियुग में होती हैं। गोप–गोपियाँ हैं यहाँ। एक बाप के बच्चे। अनेक गोप अनेक गोपियाँ हैं। यह है मीठा सम्बन्ध। गोपी बल्लभ के गोप गोपियाँ मीठा अक्षर है ना। तो सारे विश्व को गोपिनीये बनाते हैं। बच्चे जानते हैं इस विश्व को बहुत सुन्दर बनाते हैं। तुम योगबल वाले वॉलिटियर्स हो। अथवा महावीर हो। महावीर आदिदेव को कहते हैं जो माया पर जीत पाते हैं उनको महावीर कहा जाता है। अपनी जांच करनी होती है। कहाँ माया वार तो नहीं करती है।

28/10/68 3

विकारों के वश तो नहीं है। काम महाशत्रु सबसे जास्ती वार करती है। आधा कल्प की यह बीमारी है। अविनाशी वैद्य बाप कहते हैं यह बीमारी भी उथलेगी। बाकी तुम अचल, स्थिरियम रहना। हनुमान का मिसाल है ना। 5 विकारों का तूफान आये; परन्तु घबराना न है। मुँझना न चाहिए। आने का ही है। परीक्षा होती है। मजबूत ऐसा रहना है जो कोई भी विकर्म न हो। क्रिमनल आई न हो। बाप ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं ना। यह तो अज्ञान के नेत्र हैं उनको फोड़ना है। अर्थात् अपन को आत्मा समझना है। औरों को भी आत्मा दिखाना है। हिंसा कुछ नहीं करनी है। यह सभी है शिवबाबा की बारात। तुम हो बच्चे। बाप आये हैं गुल गुल बनाकर साथ ले जाने। इसलिए शिव की बारात कहा जाता है। बच्चों को मालूम है हमको यहाँ इस सृष्टि पर रहना न है। पार्ट बजाना है। शिवबाबा को तो पैर है नहीं। वह तो है निराकार। यह तो ड्रामा का चक्र है।

जो भी ब्राह्मण है वह तो रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को जान गये हैं। धणी के हो गये हैं। लून पानी न होना इसमें ही बहुत मेहनत है। एक/दो से विपरीत न बनना है। विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। अच्छे2 महारथी भी ऐसे होते हैं। नानक ने भी कहा है ना हे भी सत्य, हो सी भी सत्य.....तो बच्चों को यह स्मृति रहनी चाहिए। हम आत्माएँ 84 का पार्ट बजाती हैं। वन्डर है ना। वह तो सात वन्डर्स कहते हैं। बाप का तो एक ही वन्डर है स्वर्ग। उस स्वर्ग में तुम मालिक बनते हो। तो बच्चों को बड़ी खुशी होनी चाहिए। बाबा को रथ भी ब्रह्मा का मिलता है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। ब्राह्मण बन देवता बनते हैं। तो विष्णु के माला बन जाते हैं। तो यह है ज्ञान मार्ग वह है भक्ति मार्ग। ज्ञान दिन भक्ति रात। सुख ही सुख। फिर भक्ति है दुख। पुकारते हैं ना तुम मात पिता हम बालक तेरे। स्वर्ग में सुख घनेरे थे। अभी है दुख घनेरे। बाप रास्ता बताते हैं तो याद करना चाहिए ना। स्व को सृष्टि चक्र के आदि, मध्य, अन्त की नालेज हुई। गदा तो है ही रावण को मारने की। यहाँ तुम बच्चों को सारा चक्र स्मृति में आता है। बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। यह याद रहे तो भी विकर्म विनाश हो। कोई तकलीफ की बात ही नहीं। पुरुषार्थ बड़ा या प्रारब्ध बड़ी? पुरुषार्थ से प्रारब्ध बनती हैं। पुरुषार्थ जरूर करना पड़ता है। पुरु0 बिगर कोई रह नहीं सकता। बाप की(ही) मनुष्य को देवता बनाते हैं। ऐसे मीठे2 बाप को बहुत ही प्यार से याद करना चाहिए। घड़ी2 बाप की याद थिरक जाती है। माया का काम है भुलाना। कोई न कोई विकर्म हो जाता है। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।

बाप कहते हैं भाई बहन की वा बहन बहनों में विपरीत बुद्धि न होनी चाहिए। एक/दो के साथ थोड़ी भी विपरीत बुद्धि है तो देहअभिमानी बन पड़ते हैं। तुम पुरुषार्थी हो ना। महारथी घोड़ेसवार प्यादे गाये जाते हैं। विपरीत बुद्धि होने से देहअभिमान हो जाता है। तुम कहते हो हम आठ के दाने में जावे। श्रीना0 दी फर्स्ट सेकण्ड.....आते हैं। परन्तु इसमें मेहनत चाहिए। जरा भी बेइज्जती न हो। इसको कहेंगे पास विथ आनर। कितना बड़ा स्कूल है। आठ रत्न गले में पहनते हैं। कब भी 108 की वस्तु नहीं बनाते हैं। यह तो डबल जवाहरी है ना। एक तो मुख से रत्न निकलते हैं। रूप और बसंत है ना। बाप ज्ञान का सागर है तो तुम्हारे पर भी ज्ञान का वरसा करते हैं। तुम बच्चे क्या से क्या बन जाते हो। विकार तो कब ख्याल में भी न आना चाहिए। नफरत आनी चाहिए।

बेहद का बाप कहते हैं पवित्र बनो। हम उनकी भी नहीं मानते हैं? क्रिमनल आई को बदल सिविल आई बनाना है। विकार का ख्याल भी न आये। भाई2 हैं तो क्रिमनल ख्याल भी नहीं। तुम खुद वारीयर्स हो। तुम्हारे में कमान्डर भी हैं मेजर्स भी हैं। कब भी कुबुद्धि न होनी चाहिए। कदम2 पर बाप से पूछ सकते हो। सबसे कड़ा पाप है काम का। यह बड़ा शैतान है। आदि, मध्य, अन्त दुख देते हैं। इस पर जीत पाने से ही जगतजीत बनेंगे। पावन बन सतयुग में जावेंगे। पावन सतयुग में पतित कलियुग में होते हैं। दोनों यहाँ हैं। पावन के आगे पतित माथा टेकते हैं। सच्चे महात्मा बच्चे हैं। सतयुग में 5 विकार का किसको भी पता नहीं। रावणराज्य ही नहीं। तो ऐसा संकल्प की(ही) कैसे आवेगा। तुम बच्चे जानते हो यह चक्र फिरता रहता है।